जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

☎ : (०२०) २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया एम.ए.

संपादिका : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया बी.कॉम.

❖ वर्ष ४८ वे ❖ अंक ८ वा ❖ एप्रिल २०१७ ❖ वीर संवत २५४३ ❖ विक्रम संवत २०७३

।। भगवान महावीर स्वामी जन्मकल्याणक महोत्सव ।।

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● महावीर को जाने और मानें ही नहीं, पाएँ भी	२३	● ब्लॉगींग – नवीन पिढीचे पैसे व नाव मिळविण्याचे उत्कृष्ट साधन	८३
● धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा	२५	● विराट है महावीर दर्शन	८४
● निर्वाण पथ के पथिक भगवान महावीर	२७	● अक्षय तृतीया	८५
● ज्ञान बिंदू	२९	● परिवर्तन जीवन है	८७
● कव्हर तपशील	३१	● दुख मुक्ति एवं सुख-समृध्दी के सूत्र	९२
● २००० गावांना दुष्काळमुक्त करण्याचा बीजेएस चा संकल्प	३२	● समस्या का समाधान में महावीर का योगदान	९३
● वर्षीतप पारणा, चिचोंडी	३३	● जैन आगमातील अद्‌भूतता	९६
● जिनेश्वरी : अध्याय ११ – बहुश्रुत पूजा	४३	● आदमी 'मोबाईल' है...	९९
● अक्षय तृतीया – दान	४८	● कैसे जिएँ बुढापा	१०९
● सुखी जीवन की चाबियाँ – अतिथी सत्कार और दीन अनुकम्पा	४९	● ऐसी हुई जब गुरुकृपा – ऊँचाई पर रह	१११
● संयम	५९	● भगवान महावीर आणि त्यांचे तत्त्वज्ञान	११३
● जबकि	६०	● भगवान महावीर का अपरिग्रह दर्शन	११५
● सफलता का परफेक्ट रास्ता	६१	● आला उन्हाळा आरोग्य सांभाळा !	११९
		● विचार धारा	१२४

- रहस्य चिर – युवा रहने का १२५
- जल ही जीवन है १३१
- कडवे प्रवचन १३२
- सुखी जीवन जीने के लिए धन आवश्यक या धर्म ? १३३
- संकल्प करु या वाचनाचा १३६
- जैन इंटरनॅशनल ट्रेड ऑर्गनाएजेशन (JITO) १३९
- JATF पुणे MPSC परीक्षेत सुयश १४१
- श्री. गौरव भळगटिया – सुयश १४४
- जितो पुणे, जेपीएल क्रिकेट लिग समारोह १४५
- संचेती ट्रस्ट, पुणे १४७
- डेक्कन होंडा, पुणे १४८
- शर्मिला ओसवाल पंतप्रधान भेट १४९
- सौ. छाया मोदी, मुंबई – पुरस्कार १५१
- युवाचार्य दीक्षा दिवस – चाकण १५३
- पंख १५५
- विचारधन १५५
- लोटस इव्हेन्टस – दुबई ऑफीस १५७
- क्रेडाई महाराष्ट्र अध्यक्षपदी श्री. शांतीलालजी कटारिया, पुणे १५९
- मनशा गृहप्रकल्प, वाघोली – शिलान्यास १५९
- स्त्री साहित्य कला संमेलन, चिंचवड १६०
- रोख व्यवहाराची मर्यादा दोन लाखावर १६३
- वीतराग सेवा संघ, पुणे १६४
- मेरी समझ में न आया १६५
- किस्मत की जमीनपर मेहनत का पेड लगाइए १६७
- श्री शांतीनाथ सेवा संस्था – संगमनेर १६८
- आशापुरा माँ मंदिर, पुणे – प्राणप्रतिष्ठा १६९
- जीवन जागृति शिक्षा संस्कार शिबिर १६९
- आओ सेल्फी ले १७०
- बहना नहीं; चढना है १७२
- याद नहीं फरियाद नहीं १७४
- प्राणायाम एक विद्या है १७५
- आचार्य आनंदऋषिजी हॉस्पिटल – अहमदनगर १७५
- हास्य जागृति १७७
- विश्व तारक धाम, दापोली १७९
- श्री. प्रकाशजी गांधी, पुणे १८१
- जीवन का गणित हल करो १८३
- विनाश का नहीं, विकास का सच्चा मार्ग प्रशस्त करो १८४
- मृत्यु का महोत्सव बनाएँ १८७
- सुट्टीचे दिवस १८७
- मिठी जुबान का जादू १८८
- भगवान महावीर एक परिचय १८९
- विविध धार्मिक, सामाजिक व राजकिय बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित, एकूण अंक १२

❖ पंचवार्षिक वर्गणी –२२०० रु. ❖ त्रिवार्षिक वर्गणी – १३५० रु.

❖ वार्षिक वर्गणी – ५०० रु. ❖ या अंकाची किंमत ५० रुपये.

❖ वर्गणी व जाहिरात रोखीने/On line / RTGS / AT PAR चेक/पुणे चेकने/मनीऑर्डर/ड्राफ्टने/ 'जैन जागृति' नावाने पाठवावी.

● www.jainjagruti.in ● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

हे पत्रक संपादक, प्रकाशक, मुद्रक व मालक श्री. संजय कांतीलाल चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, पर्वती, पुणे ९ येथे छापून ६२, ऋतुराज सोसायटी, पुणे ३७ येथे प्रसिद्ध केले. लेखकांच्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवायीसाठी पुणे न्यायालय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३ **मो. संजय:९८२२०८६९९७ सुनंदा:९४२३५६२९९१, www.jainjagruti.in**

Email : jainjagruti1969@gmail.com ● Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

- **भोसरी, चिंचवड, निगडी –** श्री. चांदमलजी लुंकड – फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९१९४०९
- **पुणे शहर ❖ कुर्डुवाडी –** श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ८७९३००००८१
- **गुरूवार पेठ, पुणे –** श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
- **धनकवडी, पुणे –** श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५
- **मार्केटयार्ड, पुणे –** श्री. प्रमोदकुमार शांतीलालजी छाजेड, मो. : ९८८१८७३७१०
- **महावीर प्रतिष्ठान, पुणे –** निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
- **सदाशिव पेठ, परिसर, पुणे –** सौ. स्वाती राजेंद्रजी कटारिया, मो. : ९८८१२०४३९०
- **वडगाव शेरी, पुणे –** सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
- **वडगाव मावळ, पुणे –** श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
- **खडकी, पुणे –** श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८४
- **औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेरगाव –** श्री. शिरिषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२१३००५५९
- **दापोडी, पुणे –** श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
- **नांदेड सिटी, पुणे –** श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६
- **दौंड, श्रीगोंदा –** श्री. रविंद्र चेनसुखलालजी गुगळे – ९८९०७२३४०२
- **घोडनदी, जि. पुणे –** श्री. पारसमलजी बांठिया, मो. : ९२२५५४२४०६
- **अहमदनगर –** श्री. महेश एम. मुनोत– मो. ९४२०६३९२३०
- **जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका –** श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी – मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
- **सोनई –** श्री. मदनलालजी सी. भळगट – फोन : ०२४२७–२३१४६१, मो. ९८८१४१४२१७
- **औरंगाबाद –** श्री. सुभाषचंदजी मांडोत–फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
- **मुंबई** खारघर– श्री. मदनलालजी गांधी–मो. ९८२०५३६७९३
- **नाशिक –** श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३–२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
- **नाशिक –** मनोज लखीचंदजी खिंवसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
- **बीड –** श्री. अतुलकुमार शरदचंद्रजी कोटेचा, मो. ९९६००२४२२४
- **गारगोटी** (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
- **श्रीरामपूर –**श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
- **लासलगाव –** श्री. मनसुखजी साबद्रा, मो. : ९३२६३२५३४७
- **बारामती–** डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२–२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
- **अंमळनेर, जि. जळगाव –** श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
- **जळगाव –** श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
- **धुळे –** श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
- **शहादा, जि. नंदुरबार –** श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
- **इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर –** श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
- **मिरज, जि. सांगली –** श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
- **कोल्हापूर –** सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१–२५४२२५३
- **सातारा व सातारा जिल्हा –** श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. – ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४

महावीर को जानें और मानें ही नहीं, पाएँ भी

प्रवचनकार : आचार्य प्रवर श्री हिराचंद्रजी म.सा.

अनन्त-अनन्त जीवों के लिए मंगल-उत्तम-शरणदाता पंच परमेष्ठी भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन !

बन्धुओं !

संसार के संसरण को संकुचित करने वाला, भव-भ्रमण की श्रृंखला को नष्ट करनेवाला, कर्म के कलंक को काटने वाला परम पवित्र, प्रकाश-पुँज-दिवस आज उपस्थित है । आज का दिन भगवान् महावीर को देखने का दिन है । आज का दिन भगवान् महावीर के मार्ग पर चलकर उन्हें पाने का दिन है । जीवन की दृष्टि से भगवान् महावीर को नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव से जाना जाता है । जानने की दृष्टि से हम भाग्यशाली हैं, हमें वीतराग वाणी के अनुसार उनके बाह्य और अन्तरंग दोनों जीवन जानने का अवसर आगम के माध्यम से मिल रहा है ।

नाम से लोग जानते हैं । उववाई-सूत्र गाथा १६ को पढ़कर देख लीजिए वहाँ तीर्थंकर भगवन्तों का सिर से नख तक का वर्णन मिलता है । सिर कैसा है, आँख-नाक कैसे हैं, ऊपर से नीचे तक एक-एक अंग का वर्णन उववाई-सूत्र में मिलता है । उववाई-सूत्र में भगवान् महावीर की आकृति का वर्णन पढ़ या सुनकर भगवान् महावीर की आकृति की पहचान कर सकते हैं। स्थापना के माध्यम से जो कुछ देखा जा रहा है, वह केवल मात्र कल्पना हैं । आकृति भी शास्त्र से ज्ञात हुई है । भगवान् की आकृति बताने वाले सूत्र में जैसा वर्णन आया, आकृति की रचना वर्णन के आधार से कर दी।

मूर्ति बनाने वालों ने भगवान् को नहीं देखा । देखना तो दूर सपने में भी मूर्ति का आकार नहीं आया होगा । तब प्रश्न उठता है कि आकृति कैसे बनी ? आकृति से स्थापना का रूप मिलता है । उववाई सूत्र के माध्यम से वर्ण का, रूप का, आकृति का और उनके चिन्ह और लक्षणों को देखकर मूर्ति का निर्माण किया जाता है । साँप का चिन्ह है तो भगवान् पार्श्वनाथ हैं, सिंह का चिन्ह है तो भगवान् महावीर हैं, बैल का चिन्ह है तो भगवान् ऋषभदेव हैं । द्रव्य महावीर की बात कहें तो आप भी महावीर के रूप में हैं । भगवान् महावीर ने सामायिक की साधना की, अभी आप भी महावीर की तरह नजर आ रहे हैं । दूसरे शब्दों में कहें - महावीर नाटकों के पात्र में भी मिलते हैं । नाटक करने वाले महावीर जैसी वेशभुषा धारण करते हैं, वैसा मुकुट लगाते हैं । महावीर का नाटक करने वाले महावीर के रूप में देखे जा सकते हैं । इसलिए नाम, स्थापना और द्रव्य वंदनीय नहीं माना गया है ।

नाम से कई लोग हैं जिनका नाम ''महावीर'' है। आकृति भी महावीर की बनाकर बैठ सकते हैं । भगवान् महावीर ने जैसे व्रत धारण किए और जिस रूप में रहे, बहुरूपिया भी वैसा कर सकता है । मेरे कहने का तात्पर्य है - नाम, स्थापना और द्रव्य से महावीर बना जा सकता है, पर कब ? जब राग-द्वेष से, मोह-माया से, विषय कषाय से हटें, कर्म-जंजीरें तोड़ें ।

आज हम भगवान् महावीर की चर्चा कर रहे हैं। कभी-कभी लोग कह देते हैं कि पुण्य तिथियों को मनाने में क्या रखा है ? लोग कहने में चाहे जो कहें लेकिन निमित्त भी कभी आदमी को उपर ऊठने में एक कारण बनता है । बाहर की आकृति भी कभी आदमी में उन गुणों को लेने की प्रेरणा करती है ।

भगवान् महावीर का सही स्वरूप जानना है तो आचारांग सूत्र (प्रथम श्रुतस्कन्ध-नवम अध्ययन) देख

लीजिए । भगवान् ने कैसे-कैसे परीसह सहन किए? उनकी भिक्षा-वृत्ति का मार्ग कैसा होता है ? भगवान् महावीर की तरह भिक्षा-वृत्ति के दोष टालने वाले कौन हैं ? नौ-कोटि शुद्ध आहार करने वाले विरले मिलते है । आज भी, नास्ति नहीं है । जिनका भाव जग गया, वे आज भी निर्दोष आहार लेते हैं । निर्दोष आहार नहीं मिला तो ग्रहण नहीं करते । भले ही एक-दो दिन नहीं, कई-कई दिन बीत जाए । परीषह की दृष्टि से दीक्षा लेने के पश्चात् भगवान को अनेक परीषह सहने पड़े । भगवान् के पारणों के उल्लेख में कभी खीर, छाछ, कभी उड़द के बाकले, कभी बेर का चूर्ण जैसी वस्तुएँ मिली । भगवान् को पानी ग्रहण कहाँ हुआ ? भगवान् को साढ़े बारह वर्ष में खीर मिलने का उल्लेख मिलता है । खीर में दूध की उपस्थिति, पानी का यत्किंचित अस्थाई विकल्प हो सकता है । कभी कोई तरल पदार्थ मिला, उसमें पानी की पूर्ति हो गई होगी, किन्तु बेर का चूर्ण या उड़द के बाकलों से पानी की पूर्ति कैसे हुई होगी ?

भगवान् को पाँच महिने पच्चीस दिन बाद आहार मिला । पारणे में खाने की वस्तु मिल गई, पानी नहीं मिला, आप अनुमान करें क्या स्थिति बनी होगी ? एक-एक परीषह का वर्णन आचारांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध के नौवे अध्ययन में मिलता है । हम परीषह से बचना चाहते हैं पर भगवान् कर्म काटने को परीषह झेलने आर्य क्षेत्र से अनार्य क्षेत्र में गए । हम सोचकर चलते हैं, आगे कौनसा गाँव है ? वहाँ रूकने के लिए कौनसा स्थान है, किस जगह व्यवस्था हो सकती है? पर भगवान् ने ऐसे क्षेत्रों में विहार किया जहाँ आहारपानी मिलना संभव नहीं था । लोग बहराना जानते ही नहीं थे, उस क्षेत्र के लोग आहार-पानी बहराना तो दूर की बात, वहाँ के लोग छू-छू करके कुत्तों को उनके पीछे छोड़ते थे, लाठी का प्रहार करते थे धूल बहराते थे । भगवान् ने सभी परीषहों को समभाव से सहन किया, इसलिए वे महावीर कहलाए ।

भगवान् महावीर की साधना का वर्णन देखना चाहें तो आचारांग सूत्र के माध्यम से देखे । उपमाएँ देखना चाहें तो सूयगडांग सूत्र के छट्ठे अध्याय वीर स्तुति का अध्ययन करें । भगवान् के लिए वहाँ वर्णन मिलता है । वीर स्तुति में कहा है - हाथियों में जैसे ऐरावत हाथी, मृगों में सिंह, नदियों में गंगा प्रधान है ऐसे ही निर्वाण को प्राप्त करनेवाले महावीर श्रेष्ठ एवं प्रमुख कहलाते हैं । भगवान् महावीर के निर्वाण-मार्ग का जो वर्णन मिलता है, वह अद्भूत है । भगवान् का इतना समय गुजर जाने के बाद भी कोई भगवान् महावीर का विरोध करने वाला नहीं । गंगा गई समुद्र में मिल गई, आत्मा गई परमात्मा में मिल गई, दीप बुझ गया निर्वाण को प्राप्त हो गया । भगवान् महावीर का निर्वाण ''एक माँहि अनेक राजे, अनेक माँहि एककं'' इस उक्ति को साकार करता है । भगवान् निर्वाणवादियों में श्रेष्ठ थे, ऐसा वर्णन किसी अन्य परम्परा या दर्शन में नहीं मिलता ।

भगवान् महावीर का ज्ञान देखना चाहें तो भगवती सूत्र देखिये । जिन-जिन लोगों ने समस्याएँ रखीं, भगवान् ने सम्यक् समाधान दिया । भगवान महावीर जैसा अकाट्य समाधान आज तक किसी ने नहीं दिया। भगवान् ने नय-शैली से समाधान दिया । भगवती सूत्र में छत्तीस हजार प्रश्नों की बात सुनी है । आवश्यक निर्युक्ति में आगम के मूल ग्रन्थों की बातें मिलती है । जन्म, जन्मोत्सव, बचपन का आवश्यक नियुक्ति में वर्णन है । उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से संथारे से सिध्दि तक की बात कही गई है ।

आज भगवान् महावीर को जानने, मानने और देखने का दिन है, साथ ही आज हमारा यह संकल्प भी होना चाहिये कि आज का दिन महावीर को पाने का दिन है । महावीर को पाने के लिए महावीर की तरह साधना, सहनशीलता और क्षमा धारण करने से महावीर बना जा सकता है । आपकी साधना कैसे होती है ?

शरीर से, इन्द्रियों से, मन से कैसे स्थिर रह सकते है ? यह चिन्तन का विषय है । आप भगवान् महावीर को जानिए, समझिये और पाने के लिए अपना आचार-विचार और पुरूषार्थ लगाएँगे तो आपका सुनना और हमारा सुनाना सार्थक होगा ।

मानव से भूलें होती हैं । कमजोरियाँ होना, भूलें होना मानव का स्वभाव है ऐसा कहूँ तो अतिशोयोक्ति जैसी बात नहीं है । मनुष्य में कमियाँ होती है । कमजोरियाँ रह सकती है पर सब में सब तरह की कमजोरियाँ नहीं हो सकती । कुछ कमजोरियाँ गौण तो कुछ प्रमुख कमजोरियाँ होती है । मेरे में कौनसी कमजोरी है ? मैं अपनी कमजोरी कैसे दूर करूँ ? इसका मैं चिन्तन करूँ । आप अपनी कमजोरियों को देखे और समझे । हर व्यक्ति को संकल्पबध्द होकर प्रयास करना चाहिए । प्रयास करने वाला पार होता है। राम ने पूछा सुग्रीव से कि ''लंका कितनी दूर है?'' जब राम ने सुग्रीव से यह पूछा तो वहाँ उपस्थित सुभटों ने एक स्वर से कहा कि पास हो या दूर, क्या अन्तर पड़ता है क्योंकि रावण के सामने तो हम सब तिनके हैं, उस पर विजय पाना हमारे लिए असंभव है। ऐसी बातें सुनकर भी भगवान् राम और लक्ष्मण लंका में जाकर सीता की खोज कर उसे लाने के लिए लगातार कठिन से कठिन उद्यम करते रहे और अन्त में लंका में प्रवेश कर रावण का वध किया और सीता को पाया । त्रिषष्टिशलाका पुरूष चरित्त में इसका विस्तृत विवरण ७/६-८ में आया है । कहने का तात्पर्य है कि उद्यम करने वाला मंजिल पाता है । आज के दिन संकल्प लेकर चलें तो एक-एक कमजोरी दूर होती जाएगी । आज का दिन महावीर प्रभु को जानने, मानने और पाने का दिन है ।

आपने विजय सेठ और विजया सेठानी का संकल्प सुना है । उन्होंने शादी करने के साथ संकल्प किया । कितना महान् संकल्प था ? शीलव्रत के उस संकल्प को जानें । जो संकल्प के अनुसार चलते हैं, उन्हें मंजिल मिलती है ।

आपमें से कई दादा हैं किन्तु शीलव्रत लेने का कहूँ तो जबाब मिलता है कि विचार करेंगे । यह जवाब क्यों ? अभी भावना जगी नहीं । आप, पाप घटाने का प्रयास करें, कुशील घटाने का लक्ष्य बनाएँ। आरम्भ कम करें, कषाय घटे तो आप महावीर बनने के पथ के पथिक कहला सकते हैं । आप आज के दिन यह संकल्प करें कि हम महावीर को जानेंगे, मानेंगे और पाएँगे । आप महावीर बनने का प्रयास करेंगे तो सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो सकेंगे । ●

कव्हर तपशील - एप्रिल २०१७

❖ **श्री. प्रकाशजी गांधी, पुणे – मूर्ती स्थापना**
गणात्रा कॉम्प्लेक्स, बिबवेवाडी, पुणे - ३७ येथे श्री. प्रकाशजी हुकुमचंदजी गांधी (पाबळवाला) यांनी आपल्या बंगल्याच्या प्रांगणात श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवानची मूर्ती स्थापन केली. या कार्यक्रमास आचार्य श्रीमद् विजय विश्वकल्याण सुरीश्वरजी म.सा. यांचे सान्निध्य लाभले.

❖ **मनशा गृहप्रकल्प, वाघोली – शिलान्यास**
पुणे नगर रोड, वाघेश्वर मंदिरासमोर, वाघोली, पुणे यथे मंगलशांती डेव्हल्पमेंट कॉर्पोरेशन यांचे मनशा हा नूतन गृहप्रकल्प साकार होत आहे. या प्रकल्पामध्ये प्रगट प्रभावी श्री मणिभद्रवीर, लक्ष्मीदायिनी श्री महालक्ष्मी माता व विद्यादायिनी श्री सरस्वती माता यांचे मंदिर निर्माण करण्याकरिता भूमिपूजन व शिलान्यास समारोह २० मार्च रोजी संपन्न झाला. यावेळी विधी करताना श्री. उत्तमजी बाठीया परिवार व श्री. अशोकजी गुंदेचा परिवार इ. मान्यवर.

❖ **विश्वतारक धाम, दापोली – विरायतन**
दापोली येथील विश्वतारक धाम येथे आचार्य श्री चंदनाजी म.सा. यांचे २० मार्च रोजी मंगल आगमन झाले. विश्वतारक धाम येथे एन.ए. बंगलो प्लॉटचा भव्य प्रॉजेक्ट आहे. आचार्यनी येथे नवीन विरायतन बनवण्याची घोषणा केली. यावेळी संपूर्ण महाराष्ट्रातून मान्यवर उपस्थित होते. विश्वतारक धामचे प्रोजेक्टचे श्री. महावीरजी चनोदिया व त्यांच्या टिमने सर्वांचे स्वागत केले.

❖ **सौ. शर्मिला ओसवाल – पुणे**
पुणे येथील ग्रीन एनर्जी फौंडेशनचे संचालिका सौ. शर्मिला ओसवाल यांच्या डिजीटल वूमन वॉरीयर या उपक्रमाचे कौतुक पंतप्रधान श्री. नरेंद्रजी मोदी यांनी केले.

❖ **श्री. शांतीलालजी कटारिया, अध्यक्षपदी**
पुणे येथील श्री. शांतीलालजी भिकमचंदजी कटारिया (आदित्य बिल्डर्स) यांची क्रेडाई महाराष्ट्राच्या अध्यक्षपदी बिनविरोध निवड झाली. क्रेडाई महाराष्ट्राची निवडणूक १८ मार्च २०१७ रोजी नाशिक येथे झाली.

❖ **नगरसेवक श्री. प्रवीणजी चोरबेले – सत्कार**
दि पूना मर्चन्टस् चेंबरतर्फे होळी निमित्त सर्व व्यापारी व दलाल बंधूचा स्नेहमेळावा २२ मार्च रोजी आयोजित केला. यावेळी पुणे मनपाचे नुतन महापौर सौ. मुक्ता टिळक, उपमहापौर श्री. नवनाथजी कांबळे, सभागृह नेता श्री. श्रीनाथजी भिमाले, नगरसेवक मा. श्री. प्रवीण चोरबेले यांचा सत्कार पूना मर्चन्ट चेंबरतर्फे करण्यात आला. वर्धमान सांस्कृतिक भवन येथे अनेक मान्यवरांच्या उपस्थितीत सत्कार समारोह संपन्न झाला.

❖ **स्त्री साहित्य कला संमेलन, चिंचवड**
जैन कॉन्फरन्स पंचम झोन व स्वानंद महिला संस्था यांच्यातर्फे 'स्त्री साहित्य कला संमेलन २०१७' चिंचवड येथे भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाले. कॉन्फरन्सच्या राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा रुचिराजी सुराणा यांचे स्वागत स्वागताध्यक्ष सौ. मंगला अभयजी संचेती, प्रा. सुरेखा कटारिया, सौ. वर्षा टाटीया यांनी केले.

यावेळी राष्ट्रसंत आचार्य श्री आनंदऋषिजी पुरस्कार पी.एच. डायग्नोस्टिक सेंटर यांना देण्यात आले. हा पुरस्कार डॉ. हेमंत धोका, श्री. पारसजी मोदी इ. मान्यवरांनी स्विकारला.

❖ **सौ. छाया मोदी, मुंबई – पुरस्कार**
मुंबई येथील उद्योगपती व ज्येष्ठ कार्यकर्ते श्री. पारसजी मोदी यांच्या पत्नी सौ. छाया यांना आयकॉन फाऊंडेशनतर्फे ७ मार्च रोजी मुंबई येथे कुलगुरु डॉ. शशिकला वंजारी यांच्या हस्ते ''महाराष्ट्र कन्या गौरव'' पुरस्कार देण्यात आला.

❖ **जीतो, पुणे – जेपीएल क्रिकेट लीग**

जीतो पुणेच्या वतीने जेपीएल क्रिकेट लीग स्पर्धेचे भव्य आयोजन पुणे शहरात करण्यात आले. ५ मार्च रोजी समारोह सोहळा अत्यंत दिमाखात पार पडला. या प्रसंगी विशेष अतिथी म्हणून माजी कर्णधार मोहम्मद अझरुद्दीन, गोलंदाज चेतन शर्मा, अभिनेत्री रविना टंडन, आसामचे सचिव विशाल सोळंकी, पोलीस आयुक्त रश्मी शुक्ला उपस्थित होते. व्यासपीठावर जीतो पुणेचे अध्यक्ष श्री. विजयजी भंडारी, उद्योजक श्री. रसिकलालजी धारीवाल, शोभा धारिवाल, डॉ. एस. के. संचेती, उद्योजक श्री. अभय फिरोदिया, जेपीएल समितीचे प्रमुख श्री. मनोज छाजेड इ. उपस्थित होते.

❖ **संचेती ट्रस्ट, पुणे – पाणपोई**

स्व. इंदूमती बन्सीलालजी संचेती ट्रस्टच्या वतीने मार्केटयार्ड, पुणे येथे श्री. अभय संचेती यांच्या वतीने पाणपोई सुरु करण्यात आली. पाणपोईचे उद्घाटन मार्केट कमिटीचे सभापती श्री. दिलीप खैरे, ॲड. अभय छाजेड, नगरसेवक श्री. प्रवीण चोरबेले, श्री. पोपट ओस्तवाल, श्री. अभय संचेती, श्री. मनीष संचेती श्री. पन्नालालजी संचेती यांच्या उपस्थितीत झाले.

❖ **लोटस इव्हेन्टस् – दुबई ऑफीस**

पुणे येथील श्री. संदीपजी भटेवरा यांची लोटस इव्हेन्टस् ही कंपनी चार वर्षात लोकप्रिय झालेली आहे. लोटस् इव्हेन्टसचे दुबई येथे नवीन ऑफीस सुरु झाले आहे. दुबई येथील ऑफीस उद्घाटन प्रसंगी श्री. संदीपजी भटेवरा, श्री आदी भटेवरा इ. मान्यवर.

❖ **श्री. मदनलालजी व सौ. सुशिलाजी भंडारी, पुणे**

पुणे येथील श्री. मदनलालजी भंडारी व सौ. सुशिलाजी भंडारी यांच्या लग्नाला ५० वर्षे पूर्ण झाल्याने श्री. अजय व श्री. सचीन भंडारी बंधूनी २० मार्च रोजी अण्णाभाऊ साठे सभागृहात ''युग पुरुष – महात्मा के महात्मा'' या नाटकाचा प्रयोग स्पॉनसर केला. ●

श्रमदान करणाऱ्या २००० गावांना दुष्काळमुक्त करण्याचा बीजेएसचा संकल्प

भारतीय जैन संघटना दरवर्षी प्रमाणे या वर्षीही दुष्काळग्रस्त भागात भरीव कार्य करीत आहे. पानी फौंडेशन ने महाराष्ट्र दुष्काळ मुक्त बनविण्यासाठी मागील वर्षी आयोजित केलेल्या वाटरकप स्पर्धेला उत्स्फूर्त प्रतिसाद मिळाला होता. या स्पर्धेचे वैशिष्ट म्हणजे गावकऱ्यांनी एकत्र यायचे व प्रशिक्षण घेऊन सर्वांनी श्रमदान करून स्वावलंबी व्हायचे. महात्मा गांधींच्या स्वावलंबनाला साजेसे स्वातंत्र्य काळानंतरचे हे सर्वांत मोठे कार्य आहे असे बीजेएसचे मत आहे.

या वर्षी २००० गावांनी स्पर्धेत भाग घेतला आहे. जरी या लोकांनी खूप श्रमदान केले तरी सुध्दा प्रत्येक गावात माथ्यापासून पायथ्यापर्यंत व जमिनीमध्ये खडकापर्यंत काम करावे लागते जे श्रमदानाने करता येणे कठीण आहे. यासाठी बीजेएसने ''श्रमदान करून दुष्काळग्रस्त होणाऱ्या गावांना कठीण काम मशीनद्वारे करून देण्याचा उपक्रम'' हाती घेतला आहे. श्री. प्रफुल्ल पारख यांच्या नेतृत्वाखाली सर्व जिल्ह्यांमध्ये समित्यांच्या नियुक्त्या करून ४०० पोकलेन किंवा १२०० जेसीबीच्या सहाय्याने १ महिन्यात काम पूर्ण करण्याचे नियोजन करण्यात आले आहे.

आपणास आवाहन– एका गावासाठी किमान १०० तास पोकलेन मशीन उपलब्ध करून देऊन (अंदाजे रक्कम एक लाख रूपये – एक गाव) त्या गावाला दुष्काळमुक्त बनविण्याचे मोलाचे काम करून या अभियानामध्ये सक्रिय सहभागी व्हावे.

– शांतीलाल मुथ्था

संपर्क : सुहिता – ९८२३३३९११६ Email : sshendye@bjsindia.org Website : www.bjsindia.org